मेरा पन्ना

—निर्मला सोनी, छठी, मुम्बई, महाराष्ट्र

कट्टी का मतलब होता है...

कट्टी का मतलब है दोस्त से सम्बन्ध तोड़ना। जब दोस्त की राय और अपनी राय अलग-अलग होती है तो कट्टी। जब हम गुस्से में होते हैं और दूसरा दोस्त उसके बारे में पूछता है या चिढ़ाता है तो कट्टी हो जाते हैं। हम तो ज़्यादा से ज़्यादा एक दिन की कट्टी होते हैं वह भी तब जब कट्टी शाम के समय हुई हो क्योंकि शाम के समय मनाने घर नहीं जा सकते है न। अगर दोपहर का समय हो तो एक या दो घण्टे। जब कट्टी होते हैं तब अँगूठा दाँत में लगाकर झटके से बाहर निकालते हैं और कहते हैं:

कट्टी-बट्टी साबुन की बट्टी
लाओ मेरे पैसे जाओ तेरे घर

— सुमित, सातवीं, होशंगाबाद, म.प्र.

कट्टी

कट्टी चावल की होती है, गेहूँ की होती है, शक्कर की होती है। कट्टी जिससे होते हैं उससे बात नहीं करते। अगर वह हमको रिसेस में या खेल के मैदान में मिलते हैं तो उसकी तरफ देखते भी नहीं या बात भी नहीं करते। कट्टी होने के कई कारण होते हैं। जैसे, किसी ने हमारी कोई चीज़ चुराई और हमको पता चला तो कट्टी हो जाते हैं। कोई फालतू में लड़ाई करने लगा तो कट्टी हो जाते हैं। किसी ने हमको गिरा दिया और हँस रहा हो तो कट्टी। हम कुछ और खेल खेलना चाहते हैं और वह कुछ और खेल खेलने को कहे तो कट्टी। हमको पापा ने कहीं जाने को कहा और वह हमारे साथ नहीं जाता है तो भाई-बहन से भी कट्टी हो जाते हैं। मम्मी ने अगर अपनी पसन्द का खाना नहीं बनाया तो कट्टी हो जाते हैं। अगर मम्मी शाम को अपनी पसन्द का खाना बना देती है तो दोस्ती हो जाती है। जैसे स्कूल में कोई दोस्त पेन्सिल, कटर नहीं लाया और हमने अपना दे दिया तो दोस्ती हो जाती है या उसको अपना टिफिन खाना पसन्द है और मैंने दे दिया तब भी दोस्ती हो जाती है। या किसी से दोस्ती करना हो तो उसके लिए एक टॉफी ले जाओ तब जल्दी दोस्ती होती है।

— रघुराज तिवारी, तीसरी, होशंगाबाद, म. प्र.

बचपन की गुहार

रोशनी को खिड़की से अन्दर तो आने दो
बादल की छाँव में कुछ गुनगुनाने दो
रोको न हमें, बाँधो ना तुम
नींद में हमें सपने सजाने दो

—भारती, चौथी, मुस्कान संस्था भोपाल से प्राप्त

उड़ने दो आसमाँ में, काटो ना ऐसे पर
सुबह की भोर में, थोड़ा मुस्कुराने दो।
जल बिन मछली तड़पती है जैसे
हमारा बचपन छीनो ना ऐसे
फैलने दो सप्तरंग इन कोरे पन्नों पर
अब हमें भी तारों संग टिमटिमाने दो
पकड़ा दो हाथों में खिलौने ही खिलौने
उजालों में भी दीपक जगमगाने दो
रोशन जहाँ करने का वादा है खुद से
पर पहले ज़रा मन को बहलाने तो दो।

— कृतिका धूत, दसवीं, उज्जैन, म. प्र.

तुलसी की पत्ती

तुलसी की पत्ती किनारे से कटी होती है। इसकी महक से जाना जाता है कि तुलसी की पत्ती है। इसका रस खाँसी, जुकाम में फायदा करता है।

— जीशान, यश विद्या मन्दिर, फैज़ाबाद, उ. प्र.

सपने देखना बन्द ना करें!

हमारे समाज में मैंने देखा है कि जो बुज़ुर्ग हैं अक्सर उनकी सोच यही होती है कि लड़की को पढ़ाकर क्या करना है। घर का काम करो बस। पढ़ा-लिखाकर नहीं बनाना है इन्हें डॉक्टर, कलेक्टर, लेक्चरर। हमारे यहाँ छोटी उम्र में ही शादी कर देते हैं और इसी उम्र में ससुराल भेज देते हैं।

जब लड़की पैदा होती है तो घरवालों को बहुत दुख होता है। सबका चेहरा मुरझा जाता है। कोई खुश नहीं होता। इतनी नफरत लड़कियों से क्यों करते हैं? क्या वे इंसान नहीं होतीं? या समाज व जीवन में इनकी कोई भागीदारी नहीं है? किसी घर में चार-पाँच लड़कियाँ हो जाती हैं तो उस औरत को कितना कोसा जाता है! इसमें उस बेचारी का क्या दोष?

जब लड़का पैदा होता है तो सारे लोग खुश होते हैं। बाजा बजाते हैं। मिठाइयाँ बाँटते हैं। रामायण बैठाते हैं। लड़का पैदा होने पर ही खुशी क्यों? लड़के को अच्छा खिलाना, अच्छा पिलाना, अच्छा पहनाना, बड़े-बड़े स्कूलों में पढ़ाना। लड़का जो माँगता है वही हाज़िर हो जाता है। बेचारी लड़कियाँ कुछ नहीं। घर में जैसा मिलता है खा लेती हैं। पहन लेती हैं। दिन भर काम करना। हाँ, ठीक समय पर काम नहीं हुआ तो डाँट सुनना। पढ़ें तो कब? रात तक बेचारी काम करते-करते थक जाती हैं।

मैं अपने बारे में कहना चाहूँगी कि मुझे तीन साल हो गए हैं पढ़ाई छोड़े। 2005 में मुझे दसवीं में दो विषयों में सप्लीमेन्ट्री आई थी। मैंने सप्लीमेन्ट्री की परीक्षा भी दी लेकिन मैं पास नहीं हुई। बाद में मैंने प्राइवेट परीक्षा दी फिर भी पास नहीं हुई। मैंने इन तीन सालों में साहित्य की किताबें पढ़ीं। अब जाना कि पढ़ाई क्या होती है? अब मैं फिर से पढ़ रही हूँ। फिर से दसवीं की परीक्षा दूँगी।

पढ़ाई की कोई उम्र नहीं होती है। अभी कुछ दिन पहले राजस्थान पत्रिका अखबार के 19 जुलाई 2009 के रविवारीय में बताया कि इंग्लैण्ड की एक वृद्धा ने दसवीं पास की है। मैं कहना चाहती हूँ कि कभी सपने देखना बन्द ना करें।

–प्रिया पथिक, 19 वर्ष, गाँव पोस्ट-रौंसी, राजस्थान

चित्रः कनक